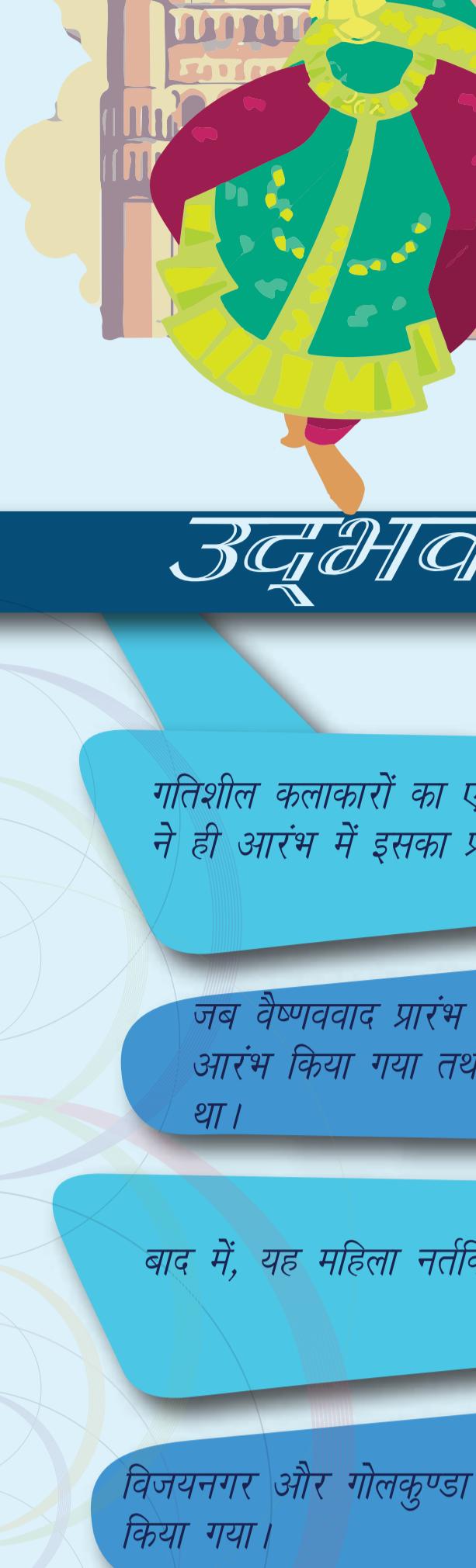


कुचिपुड़ी



लगभग २० वीं शताब्दी के तीसरे दशक में यह कुचिपुड़ी नाम से नृत्य-नाटक की लंबी व समृद्ध परंपरा से उद्भूत हुई।

इस नृत्य शैली का नाम आंध्र प्रदेश के कृष्ण जिले के कुचेलापुरी या कुचेलापुरम गांव के नाम से लिया गया है।

उत्तराधि

गतिशील कलाकारों का एक समूह जिसे कुचेलवा कहा जाता था, ने ही आरंभ में इसका प्रदर्शन किया।

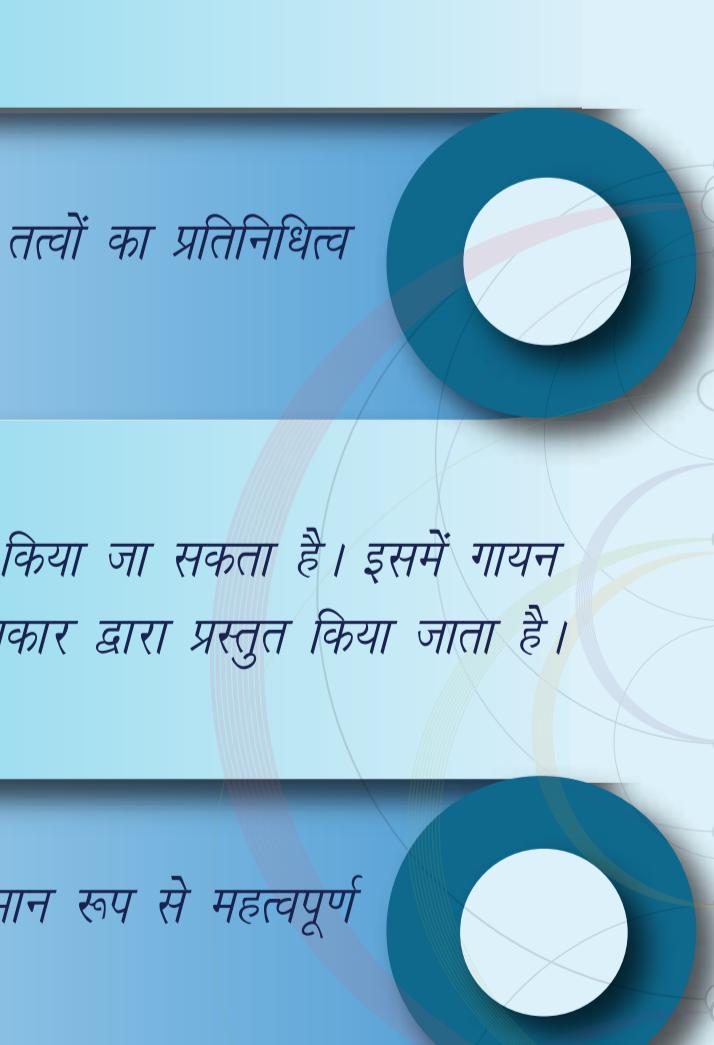
जब वैष्णववाद प्रारंभ हुआ, तब इसका निष्पादन मंदिरों में आरंभ किया गया तथा इस पर ब्राह्मण पुरुषों का एकाधिकार था।

बाद में, यह महिला नर्तकियों के मध्य भी लोकप्रिय हुआ।

२०वीं शताब्दी में बालासरस्वती और रागिनी देवी द्वारा पुनर्जीवित करने से पहले यह गांवों तक ही सीमित था।

मुख्य घटक

मंडूक शब्दम्: एक मेंढक की कहानी।



जल-चित्र नृत्यम्: नृत्य करते समय, फर्श पर पैर के अंगूठे द्वारा चित्र बनाया जाता है।

तरंगम्: पैर एक पीतल की थाली के किनारों पर संतुलित होते हैं, साथ ही सिर पर जल से भरा घड़ा भी संतुलित रहता है।

प्रमुख विशेषताएँ

भागवत पुराण की कहानियां ही गायन प्रस्तुति का मुख्य विषय बन गई और नर्तकों को भागवतथालू के नाम से जाना गया।

इस नृत्य शैली में शृंगार रस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रत्येक चरित्र स्वयं को “दास” के माध्यम से प्रस्तुत करता है,

जो प्रत्येक चरित्र के रहस्योदयाटन के लिए नृत्य और गीत की

एक लघु रचना है।

कुचिपुड़ी द्वारा मानव शरीर में पृथ्वी के तत्वों का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

नृत्य-नाटक का प्रदर्शन भी किया जा सकता है। इसमें गायन एवं नृत्य दोनों एक ही कलाकार द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

इस शैली में लास्य और तांडव दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

कर्नाटक संगीत के वायलिन और मृदंगम् का भी उपयोग किया जाता है।

राधा रेड्डी

राजा रेड्डी

इंद्राणी रहमान

यामिनी कृष्णमूर्ति